Vol 5 Issue 12 June 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 12 | June - 2016

Golden Research Thoughts

"नवाबों के युग में संगीत कला की प्रगति"

रश्मि संत
असि. प्रो– इतिहास , फ.अ.अ.रा. स्ना. महाविद्यालय , महमूदाबाद, सीतापुर.

प्रस्तावना –

संगीत, शब्द सुनते ही हमारा मन उत्साह और प्रसन्नता से भर जाता है। मन अपने आप गुनगुनाने लगता है कदम अपने आप थिरकने लगते है और ऐसा लगता है जैसे पूरे शरीर रोमांच से भर गया हो। सुर लय ताल में पिरोयी हुयी भावों की अभिव्यक्ति ही संगीत है। संगीत का मतलब सिर्फ गायन ही नहीं होता बल्कि इसमें वाद यन्त्र और नृत्य भी महत्वपूर्ण स्थान रखते है। संगीत एक ऐसी कला है जिसकी खोज मुनष्य ने आदि काल में ही कर ली थी। वैदिक काल में तों पूरा एक वेद सामवेद, संगीत पर ही आधारित है। बौद्ध काल, गुप्तकाल, पूर्वमध्यकाल और मध्यकाल में उत्तरोत्तर संगीत को प्रश्रय मिलता रहा। हालांकि कुछ शासकों ने संगीत में कोई विशेष रूचि नही ली किन्तु फिर भी संगीत की प्रगति अबाध गति से चलती रही। प्रस्तुत शोध पत्र में मैंने अवध के नवाबों के समय में संगीत कला में गायन क्षेत्र में हुई प्रगति का उल्लेख किया है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- सोजख्वानी परम्परा की शुरूआत
- फारसी पुस्तक उसूल–उल–नग्मात–उल–आसफिया की रचना
- दो प्रकार की ठुमरी शैली का प्रचलन।

(1) बोल बनाव की ठुमरी
(2) बोल बाँट की ठुमरी

हिन्दुस्तान का संगीत अत्यधिक नियमबद्ध और उच्चकोटि का था कि अपने स्थायित्व के कारण यह बाहरी प्रभाव ग्रहण ही नही कर सका। फिर भी ईरानी कव्वालों के गीतों ने हिन्दुस्तान के संगीत पर थोड़ा बहुत असर डाल ही दिया। चुनांचे उनके अनेक राग भारतीय संगीत में शामिल हो गयें। जंगूला (जंगला), जीफ़, शहाना, दरबारी, जिला (ख़माच) वगैरा के बारे में कहा जाता है कि ईरानी राग है जो यहाँ के संगीत में आकर मिल गये है।

मुगल शासन के अन्तिम दिनों में जब शासन की दशा शोचनीय थी, इस समय संगीत एवं अन्य ललित कलाओं को जीवित रखने एवं प्रगति का श्रेय अवध के शासकों को ही जाता है। अवध के शासकों के प्रोत्साहन के कारण ही लखनऊ में महान संगीतज्ञ हुये एवं अन्य स्थानों से भी प्रसिद्ध संगीतज्ञ यहाँ आकर बसने लगे।

अवध के प्रथम नवाब–सआदत खाँ बुरहान–उल–मुल्क (1724–1739) अपने नये दायित्वों के निर्वहन में अधिक व्यस्त रहे। परिणामस्वरूप उनके शासन काल में संगीत एंव अन्य कलाओं से सम्बद्ध गतिविधियाँ उपेक्षित रही। सफदर जंग (1739–1754) भी प्रशासनिक समस्याओं से घिरे रहने के कारण संगीत कला के विकास की दिशा मे कोई सार्थक कदम नहीं उठा सके। फिर भी भारतीय संगीत का जानकार होने के कारण संगीत सुनना उनके दैनिक क्रिया का एक अंग था।

शुजाउद् दौला (1754–1775) की गुणग्रहिता और उदारता के कारण सारे हिंदुस्तान के संगीतकार आकर अवध में जमा हो गये।

यहाँ अयोध्या और बनारस के संगीत के पुराने स्कूल कायम ही थे। जौनपुर के शर्की बादशाहों की कद्रदानी की कुछ–न–कुछ यादगारें भी बाकी थीं। उनमें जब दिल्ली के माहिर गवैये और यासीन खाँ के अधिकृत स्कूल के संगीताचार्य भी आकर मिल गये तो ख़ास शान पैदा हो गयी और दरअसल संगीत का एक नया दौर शुरू हो गया। शुजाउद्दौला के सम्बन्ध मे 'तारीख–ए–फैजाबाद' के लेखक का कहना है कि उन्हें नाच गाने का बड़ा शौक था। हजारों गानेवाली रंडियां, आमतौर से दिल्ली से और अन्य दूरस्थ प्रदेशों से, यहाँ आकर जमा हो गयी थीं। आम रिवाज पड़ गया था कि प्रधानमंत्री के अलावा और तमाम अमीर और फ़ौजी सरदार भी जिस तरफ कूच करते थे तो उस तरफ नृत्यगान मंडलिया और रंडियों के डेरे उनके साथ–साथ जाते थे।

अवध में सोज़ख्वानी परम्परा (किसी मृत व्यक्ति के सम्बन्ध में गाकर शोक प्रकट करना) की नींव रखने का श्रेय शुजाउद्दौला को ही है 'सोज़' को राग रागनियों मे बाँधकर सोज़ख्वानी के रूप मे कुछ ऐसे ढंग से प्रस्तुत किया गया कि वह गायन की एक विशिष्ट शैली बन गयी।

आसफउद्दौला (1775–1797): अवध के प्रथम नवाब आसफउद्दौला ने अपने काल में संगीत को अत्याधिक प्रोत्साहित किया एवं संरक्षण दिया था। मुहम्मद करम इमाम के अनुसार मुगल राज्य के पतन के बाद वहाँ के श्रेष्ठ संगीतज्ञों में अधिकांश अवध की नयी राजधानी लखनऊ की ओर उन्मुख हो गये। इस प्रकार आसफउद्दौला का दरबार देश के उत्कृष्ट संगीतज्ञों से भर गया।

अच्छे गायक एवं उस्तादो के अतिरिक्त लखनऊ मे स्त्रियाँ भी संगीत मे पारंगत थी एवं राग रागिनियाँ ऐसी सुन्दरता से गाती थीं कि श्रवणकर्ता मुग्ध हो जाते। सुन्दर जान नाम की वेश्या नवाब आसफउद्दौला के यहाँ सेविका थी और 'स्थाल' गाने में अभ्यस्थ थी। बड़ी मिसरी भी अच्छी गायिका थी जो आसफउद्दौला की यात्रा में साथ रहती थी।

आसफउद्दौला के शासन काल के समय ही दिल्ली के तबला अन्वेषक सुधार खाँ के पौत्र बख्शू खाँ एवं मोटू खाँ लखनऊ आकर बस गये थे। कालान्तर में इन लोगों को तबले के लखनऊ घराने का प्रर्वतक माना गया। लखनऊ बसने वालों में गुलाम रसूल भी थे जिनके गायन में एक अनुपम आकर्षण था। वह कव्वाल वंश की कन्या के वंशज थे एवं कव्वाल शैली में सदारंग की शैली को मिलाकर ख्याल गाते थे। कहा जाता है कि लखनऊ की जबड़े की तान के प्रर्वतक ये ही थे और लखनऊ घराने की रव्याल गायकी के प्रवर्तक गुलाम रसूल ही थे। इनके दो नाती शक्कर और मक्खन के आकर्षक संगीत ने बड़ा नाम कमाया।

ख्यातिलब्ध ध्रुवपद गायक एवं रबाब वादक बासत खाँ आसफउद्दौला के शासनकाल में आये थे। इनकी संगीत प्रतिभा से प्रभावित होकर कलकत्ता के राजा हर कुमार टैगोर की राज सभा ने इन्हें संगीत नायक की उपाधि से विभूषित किया था।

नवाब आसफउद्दौला के शासनकाल में फारसी भाषा में 'उसूल– उल–नग्मात–उल–आसफिया' नामक पुस्तक लिखी गयी। भारत की संगीत कला पर इससे बेहतर कोई किताब आज तक नहीं लिखी गयी। मुहम्मद रजा खाँ द्वारा लिखी गयी इस पुस्तक में प्रचलित राग–रागिनियों की पद्धति का खण्डन करते हुये छः राग व छत्तीस रागिनियों की अवधारणा को प्रस्तुत किया। 1813 में लिखी गयी इस पुस्तक की हस्तलिखित प्रति आज भी सालार जंग पुस्तकालय में सुरक्षित संग्रहीत है।

गुलाम रसूल के पुत्र गुलाम नबी शोरी ने एक नये प्रकार की गायन शैली को प्रस्थापित कर दिया जिसका नाम 'टप्पा' पड़ा।

नवाब सआदत अली खाँ– संगीत प्रेमी थे। यहाँ सहडू बाई नामक गायिका प्रातः काल 'नसीन सहरी' गाया करती थी। रजब अली एवं फजल अली नामक दो गायक प्रायः सआदत अली खाँ के यहाँ ख्याल गाते थे। इन संगीतज्ञों एवं संगीताचार्यों के प्रयत्नों से लखनऊ में संगीत को बहुत प्रोत्साहन मिला एवं राग–रागिनियों और उनके गायन के ढंग अविष्कृत हुये।

गाजीउद्दीन हैदर के जमाने में इस कला का एक बहुत बड़ा आचार्य लखनऊ में मौजूद था जिसका नाम हैदरी था। यह साहब चूंकि खोये–खोये रहते थे इसलिए उनका नाम सिड़े हैदरी खाँ मशहूर हो गया था। एक बार संयोगवश सिड़े हैदरी ने महल में ऐसा गाया कि बादशाह सलामत के साथ पूरा दरबार सिसकने लगा।

इस काल में सोज़ख्वानी (मर्सिया को कलात्मक रूप से गाकर प्रस्तुत करना) की परम्परा सिर पर जादू बनकर बोलने लगी थी। संगीत जगत में सोज़ख्वानी और मर्सियाख्वानी शास्त्रीय संगीत के सुर ताल के नियमों के अनुरूप प्रस्तुत होने लगी। इस काल में ऐसे–ऐसे सोज़ पढ़ने वाले गायक पैदा हुए कि बड़े–2 कलाकार उन्हें सुनकर कान पकड़ लेते थे। इस सम्बन्ध में मिर्जा रज़ब अली बेग सुरूर ने अपनी पुस्तक 'फसानए अजायब' में लिखा है–

''मर्सिया पढ़ने वाले ज़नबा मीर अली साहब ने मर्सिया पढ़ने की उस नवीन शैली का आविष्कार किया कि उन्हें आकाश ने भी उस्ताद कहा'' इमदाद इमाम की ''काशफ–उल–हकायक़'' में भी मीर अली सोज़ की सोजख्वानी की प्रशंसा की गयी है।

नासिरउद्दीन हैदर– इनके काल में भी संगीत ने अपना स्थान बनाये रखा। नवाब नासिरउद्दीन को भी संगीत से बहुत रूचि थी, जिस समय प्रातः काल वह सोकर निद्राविमुक्त होते, तुरन्त बाजे बजाने लगते एवं गायन आरम्भ होता था। इन वादनों में अंग्रेजी बाजा भी होता था। जिसे वह रूचि से सुनते थे। नासिरूद्दीन हैदर का संगीत प्रेम इस सीमा तक था कि यदि वह संगीत की कोई पुस्तक प्राप्त कर लेते तो तुरन्त राग को उसी रूप में सुनते थे। एक भैरवी राग के श्रवण हेतु लगभग 500 स्त्रियाँ दुल्हनों के समान श्रृंगार करती थीं एवं वस्त्र पहनती थीं यह राग सुना जाता था और यह उत्सव लगभग 30 दिन चलता था। नवाब हैदर के काल में अच्छे संगीतज्ञ बाहर से भी लखनऊ आकर बसे, जैसे नन्हवा जान कश्मीरन, नासिरूद्दीन हैदर के काल की प्रसिद्ध गायिकाएं थीं। इले खान नामक व्यक्ति को होरी एवं ध्रुपद राग में विशेष योग्यता प्राप्त थी।

मुहम्मद अली शाह एवं अमजद अली शाह के काल में लखनऊ में संगीत लगभग समाप्त हो गया था। इन दोनों नवाबों की संगीत के प्रति रूचि नहीं थी। संगीत को पुनः नवाब वाज़िद अली शाह के काल में राज्याश्रय प्राप्त हुआ। वह स्वयं श्रेष्ठ संगीत–प्रेमी एवं कलाकारों के आश्रयदाता थे। उनके यहाँ तानसेन के वंशज वाजिद अली खान एवं हैदर खाँ थे।

नवाब वाज़िद अली शाह की संगीत में अत्यन्त अधिक रूचि थी। उन्होंने संगीत के तीनों अंगों को समझने के लिए गायन विद्या में उस्ताद बासित खाँ को, वादन कला हेतु, प्रसिद्ध सितार वादन उस्ताद नवाब कुतुब अली खाँ को तथा नृत्य विद्या को सीखने हेतु नृत्याचार्य ठाकुर प्रसाद को अपना गुरू बनाया। धीरे–धीरे वाजिद अली शाह संगीत कला के मर्मज्ञ होते चले गये और उनका संगीत पर इतना अधिकार हो गया कि उनके समकालीन लेखकों ने उन्हें अपने समय का सर्वोत्तम कलाकार घोषित कर दिया। नवाब ने स्वयं अनेक रागरागानियों का

आविष्कार किया था, उदाहरणार्थ जूही, जोगी, कन्नड़, बादशाह पसंद आदि। वाज़िदअली शाह के शासनकाल में संगीत के आचार्य थे–प्यारे खाँ, जाफ खाँ, हैदर खाँ और बासित खाँ। हैदर खाँ का ध्रुपद पर एवं होरी पर असाधारण आधिकार था।

इस समय जनता में गज़ल और ठुमरी का प्रचलन हो गया और ध्रुपद, होरी आदि जो बहुत कठिन राग है उनकी, ओर से उपेक्षा की गयी। खम्माच, झिंझौटी, भैरवी, सुनिद्रा, तिलक, कामोद, पीलू वगैरहा छोटी–छोटी मजेदार रागिनियां संगीत प्रेमियों के लिए चुनी गयीं और यह चीज़े बादशाह को पसन्द थीं क्योंकि वे उनके स्वभाव के अनुकूल थीं।

नवाब वाज़िद अली शाह के प्रोत्साहन से ठुमरी शैली बहुत लोकप्रिय हुई। ठुमरी गायन में मुख्यतः दो शैलियां हैं–

1. बोल बनाव की ठुमरी– जो ख्याल एवं ग़ज़ल गायकी के सम्मिश्रण एवं उनमें स्थानीय धुनों के समावेश से बना।
2. बोल–बाँट अथवा बन्दिश की ठुमरी–ध्रुवपद एवं ख्याल गायकी के सम्मिश्रण से बनी।

बोल बाँट की ठुमरी का प्रवर्तन नवाब वाजिद अली शाह के शासन काल में हुआ इसके प्रवर्तक उनके दरबार के प्रसिद्ध गायक उस्ताद सादिक अली खाँ माने जाते हैं। सादिक अली के शिक्षक खुर्शीद अली खाँ भी ख्याल एवं ठुमरी गायन में दक्ष थे। इन्होंने सोच, मर्सिये एवं कलाम गाने की शिक्षा सैय्यद मीर से ली थी। बोल बाँट ठुमरी के प्रवर्तक का नाम उपलब्ध साक्ष्य ग्रन्थों व अभिलेखों में उपलब्ध नहीं है। इनके गाने वालों में फर्रूखाबाद के ललनपिया, बरेली के तवक्कुल हुसैन 'सुनद पिया' का नाम मुख्य रूप से आता है। बोल बाँट की ठुमरी अपनी क्लिष्टता के कारण लखनऊ में फलफूल न पायी। और पश्चिम दिशा की ओर खिसक गयी इसलिए इसे पछुआ ठुमरी कहा जाने लगा।

नवाब वाजिद अली शाह के समय जब संगीत अपने शिखर पर था, उसी समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रशासन और 1857–58 की क्रान्ति के कारण संगीतज्ञ पलायन करके कानपुर, पटना, कलकत्ता आदि विभिन्न शहरों में बस गये और वहाँ संगीत को नये आयाम दिये। इस प्रकार नवाबी शासनकाल में संगीत की जो प्रगति हुयी उसने संगीत को विश्वव्यापी बना दिया।

1.अब्दुल हलीम 'शरर' पुराना, लखनऊ, पृष्ठ–103–104
2.एस.एस. जाफरः एजूकेशन इन मुस्लिम इंडिया, पृ.–55
3.राम किशोर बाजपेयीः हमारा लखनऊ पुस्तकमाला–11, लखनऊ के संगीतकार, पृ.–10
4.अब्दुल हलीम 'शरर' पुराना, लखनऊ, पृ.–105–106
5.राम किशोर बाजपेयीः हमारा लखनऊ पुस्तकमाला–11, लखनऊ के संगीतकार पृ. –11
6.एस.एस. हुसैनः लखनऊ की तहजीबी मिरास, पृ.–52
7.राम किशोर बाजपेयीः हमारा लखनऊ पुस्तकमाला–11, लखनऊ के संगीतकार पृ.–11
8.एस.एस. हुसैनः लखनऊ की तहजीबी मीरास, पृ.–58
9.राम किशोर बाजपेयीः हमारा लखनऊ पुस्तकमाला–11, लखनऊ के संगीतकार पृ.–11–12
10.अब्दुल हलीम 'शरर' पुराना, लखनऊ, पृ.–106
11.राम किशोर बाजपेयीः हमारा लखनऊ पुस्तकमाला–11, लखनऊ के संगीतकार पृ.–13
12.हैदरः सवानिहत–ए–सलातीन–ए–अवध, भाग–1 पृ.–263
13.जाफर हुसैनः कदीम लखनऊ की आखिर बहार, पृ.–211
14.अब्दुल हलीम 'शरर' पुराना, लखनऊ, पृ.–107
15.राम किशोर बाजपेयीः हमारा लखनऊ पुस्तकमाला–11, लखनऊ के संगीतकार पृ.–18
16.राम किशोर बाजपेयीः हमारा लखनऊ पुस्तकमाला–11, लखनऊ के संगीतकार पृ.–16–17
17.सुरूरः फसाना–ए–इबरत, पृ.–13
18.मुहम्मद अहद अलीः शबाब लखनऊ, पृ.–44
19.एस.एस. जाफरः एजूकेशन इन मुस्लिम इंडिया, पृ.–66
20.एस.एस. जाफरः एजूकेशन इन मुस्लिम इंडिया, पृ.–66
21.राम किशोर बाजपेयीः हमारा लखनऊ पुस्तकमाला–11, लखनऊ के संगीतकार, पृ–20
22.जाफर हुसैनः कदीम लखनऊ की आखिरी बहार पृ.–57
23.अब्दुल हलीम 'शरर' पुराना, लखनऊ, –पृ.–108
24.कृष्ण मोहन सक्सेनाः अवध का संगीत (पत्रिका) लखनऊ महोत्सव 1982, पृ.–15
25.अब्दुल हलीम 'शरर' पुराना, लखनऊ, पृ.–110
26.राम किशोर बाजपेयीः हमारा लखनऊ पुस्तकमाला–11, लखनऊ के संगीतकार पृ.–21
27.सुशीला मिश्रः ग्रेट भास्करी ऑफ हिन्दुस्तानी म्यूजिक, पृ.–49–50
28.राम किशोर बाजपेयीः हमारा लखनऊ पुस्तकमाला–11, लखनऊ के संगीतकार पृ.–23–24

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org